(12)

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6655** **I**

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिंदी नाटक/एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 9×3=27

(क) जेहि छिन बलभारे हे सबै तेग धारे ।
तब सब जग धाई फेरते हे दुहाई ।।
जग सिर पग धारे धावते रोस भारे ।
विपुल अवनि जीती पालते राजनीति ।।
जग इन बल काँपै देखिकै चण्ड दापै ।।
सोई यह प्रिय मेरे ह्वै रहे आज चेरे ।।

P.T.O.

अथवा

हाँ, सुनिए। फूट, डाह, लोभ, भय, उपेक्षा, स्वार्थपरता, पक्षपात, हठ, शोक, अश्रुमार्जन और निर्बलता इन एक दूरजन दूती और दूतों को शत्रुओं की फौज में हिला - मिलाकर ऐसे पंचामृत बनाया कि सारे शत्रु बिना मारे घण्टा पर के गरुड़ हो गए। फिर अन्त में भिन्नता गई। इसने ऐसा सबको काई की तरह फाड़ा कि भाषा, धर्म, चाल, व्यवहार, खाना; पीना सब एक - एक योजन पर अलग - अलग कर दिया। अब आवें बचा ऐक्य! देखें आ ही के क्या करते हैं।

(ख) भयानक समस्या है। मूर्खों ने स्वार्थ के लिए साम्राज्य के गौरव का सर्वनाश करने का निश्चय कर लिया है ! सच है, वीरता जब भागती है, तब उसके पैरों से राजनीतिक छलछन्द की धूल उड़ती है।

अथवा

मैं अपनी आँखों से अपना वैभव और अधिकार दूसरों को अन्याय से छीनते देख रहा हूँ और मेरी वाग्दत्ता पत्नी मेरे ही अनुत्साह से आज मेरी नहीं रही। नहीं, यह शील का कपट, मोह और प्रवञ्चना है। मैं जो हूँ, वही तो नहीं स्पष्ट रूप से प्रकट कर सका। यह कैसी विडंबना है! विनय के आवरण से मेरी कायरता अपने को कब तक छिपा सकेगी ?

(ग) पच्चीस साल से इस बकरी की खोज हो रही थी। सरकार का खुफिया विभाग, पुलिस, पलटन सब इसे खोज रहे थे। आखिरकार यह बकरी आपके गाँव में मिली है। यह गाँधी जी की बकरी है। गाँधी महात्मा की बकरी है। जिन्होंने आपको इस लाइक बनाया कि आप आज इस तरह शान से खड़े हैं। आपको आज़ादी दिलाई सब लोग प्रेम से बोलिए गाँधी महात्मा की जय !

अथवा

बेटा यह कुटुंब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों ही से पेड़ पेड़ है और डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को बढ़ाती है। मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूटकर पृथक् हो जाए। तुम सदैव मेरा कहना मानते रहे हो। बस यही बात मैं कहना चाहता हूँ ।

2. क्या 'भारत दुर्दशा' नाटक दुखांत है ? युक्तियुक्त विवेचना कीजिए। 12

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक के मूल कथ्य पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी नाटक के नायकत्व पर प्रकाश डालिए।

4. 'बकरी' नाटक में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

नाटक के तत्वों के आधार पर 'बकरी' नाटक की समीक्षा कीजिए।

5. 'स्ट्राइक' एकांकी की मूल संवेदना लिखिए। 12

अथवा

'तीन अपाहिज' एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

***